Prof. Raj Kumar Prasad
J.K. College, Biraul, DBG

(प्रश्न सं०(2) → मैथिली महाकाव्य मे अलंकारक प्रयोग आ ओकर स्वरूप सँ परिचय कराउ।

(उत्तर) → अलंकार दू शब्दक योग सँ बनल अछि। ई दू शब्द थीक - अलम + कार। अलम शब्दक अर्थ होइत अछि - कयनिहार। एहि प्रकारें अलंकार शब्दक अर्थ भेल - आभूषित कयनिहार या सौंदर्य मे वृद्धि कयनिहार। तात्पर्य ई जे जाहि उपकरण सँ काव्यक सौंदर्य मे वृद्धि होइत अछि तकरा अलंकार कहल जाइछ।

काव्य शास्त्रक प्रथम आचार्य भेलाह भरत मुनि ओ अलंकारक कोनो स्पष्ट परिभाषा नहि देलनि तथापि हिनक अलंकार विवेचनक आधार पर कहल जा सकैछ जे अलंकार ओ साधन थीक जकर प्रयोग द्वारा अनुकूल भावना जागृत भ' सकय। आचार्य भामहक अनुसार नितान्त प्रकृत रूप सँ वाणी मे चारुता नहि आबैछ। वाणीक अलंकृति हेतु वक्राभिधेय शब्दोक्ति इष्ट थीक।

न नितान्तादिमात्रेण जायते चारुता गिराम।
वक्राभिधेय शब्दोक्तिरिष्टा वाचामलंकृति॥

आचार्य भामहक अनुसार वाणी के अलंकृत कयनिहार तत्व अलंकार थीक।

Scanned with CamScanner

आचार्य दण्डीक कथन छनि जे काव्यक शोभा संपादन करनिहार धर्म अलंकार कहबैछ।

काव्य शोभाकरान धर्मानलंकारान प्रचक्षेत
- काव्यादर्श (दण्डी)

आचार्य वामनक अनुसार अलंकारक कारणे काव्य ग्राह्य होइत अछि तथा काव्यमे सौन्दर्यक नामे अलंकार थीक।

काव्यं ग्राह्यमलंकरात् । सौन्दर्यमलंकार: ।।
- काव्यालंकार सूत्रवृत्ति (वामन

आचार्य आनंदवर्द्धन अलंकारक लक्षण प्रस्तुत करैत कहलनि जे अंगी अथवा अवलंबन अछि तकरा गुण कहल जाइत अछि तथा जे कथ्य आदिक सदृश अंगाश्रित अछि से अलंकार कहबैत अछि-

तमर्थमवलम्बन्ते येङ्गिन ते गुणा: स्मृता ।
अङ्गाश्रितास्त्वलंकारा मन्तव्या कटकादिवत् ।।
- ध्वन्यालोक (आनंदवर्द्धन)

आचार्य मम्मटक अनुसार अलंकार हार अछि आभूषणक समान होइत अछि।-

उपकुर्वन्ति ते सन्त येऽङ्गद्वारेण जातुचित ।
हारादिवदलंकारास्तेऽनुप्रासोपमादय: ।।
- काव्यप्रकाश (सम्मट)

Scanned with CamScanner

आचार्य विश्वनाथक अनुसार आभूषण आदि सदृश अतिमतया तथा रसादिक उपकारक शब्दार्थक अस्थिर धर्म के अलंकार कहल जाइत अछि -

शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशयिनः ।
रसादीनुपकुर्वन्तोऽलंकारास्तेऽङ्गदादिवत् ॥
- साहित्य दर्पण (विश्वनाथ)

अलंकारक प्रसंग मे विभिन्न आचार्यक मत के देखैत कहल जा सकैत अछि जे भावक उत्कर्ष तथा वस्तुक रूप गुण एवं क्रियाक तीव्र अनुभव करबा मे सहायक उपकरण अलंकार अछि। कोसर शब्द मे शब्द एवं अर्थक शोभा बढ़ौनिहार तत्व अलंकार थीक। ई काव्य मे अस्थिर चमत्कार देखबैत अछि। ई काव्यक शोभा के बढ़बैत अछि। यदि सँ काव्य मे चारुता अबैत अछि अर्थ स्पष्ट होइत अछि आ प्रभाव तीव्र होइत अछि। अलंकार में रमणीयता होयबाक चाही। शब्द के मधुर आ हृदयग्राही बनयबाक हेतु अलंकारक प्रयोग काव्य मे कएल जाइत अछि। अलंकार सँ सुषमाक सृष्टि होइत अछि आकर्षण मे वृद्धि होइत अछि।